शोध-मंथन Vol. VII No. 2, 2016 ISSN No. (P) 0976-5255, (e) 2454-339X
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
3.8942

डॉ. मनमोहन सहगल के उपन्यास 'गुरु लाधो रे' में सामाजिकता और ऐतिहासिकता

गुरप्रीत कौर *
गाँव तथा डाकघर – हीरां
नज़दीक कोहाड़ा,
जिला लुधियाना –141112
tejindersingh113@gmail.com

हिन्दी उपन्यास जगत् में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जो डॉ. मनमोहन सहगल के नाम के परिचित न हो। वे हिन्दी उपन्यास जगत् में चमकते हुए सितारे के समान अपनी रोशनी आज भी बिखेर रहे हैं। डॉ. सहगल का जन्म पंजाब के जालन्धर जिले में 15 अप्रैल 1932 को 'सहगल' नामक मुहल्ले में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री प्यारे लाल था जो कि एक सरकारी दफतर में क्लर्क के पद पर थे तथा उनकी माता श्रीमती रामप्यारी जी घरेलु कामकाजी महिला थीं। उनके जन्म के पश्चात् इनके माता–पिता लाहौर चले गए थे परन्तु 1947 के बाद वे फिर से जालन्धर में आकर रहने लगे। जब ये 15 वर्ष के हुए तो लम्बी बीमारी के कारण इनके पिता चल बसे और घर की सारी जिम्मेदारी इनके कन्थों पर आ टिकी जिसे इन्होंने बखूबी निभाया। इनका विवाह 1954 में विजयलक्ष्यमी जी के साथ हुआ जो इनकी केवल अर्धांगिनी न होकर इनकी प्रेरणा का स्रोत भी बनी।

डॉ. मनमोहन सहगल एक सहृदय व्यक्ति हैं। पिता की मृत्यु के पश्चात् इन्होंने जिन्दगी को अनेक रंग बदलते देखा है। जालन्धर के रेलवे स्टेशन पर बिना लाइसेंस के कुलीगिरी करने से अपने व्यवसायिक जीवन की शुरूआत करने वाले सहगल जी ने कचहरी के सामने ठेला लगाकर चाय तथा अन्य छोटी–छोटी चीजें बेचीं, कपूरथला जाकर गिलास, प्लेटें और चिमनियाँ बोरियों में भरकर दुकान–दुकान पर सप्लाई कीं तथा फिर काफी हाथ–पाँव मारने के पश्चात् पी.डब्लयू.डी. की बिजली शाखा के जूनियर क्लर्क भर्ती हुए। इन्होंने पढ़ाई नहीं छोड़ी और दिल्ली में पढ़ाने का काम शुरू करने के पश्चात् गवर्नमेंट कॉलेज टांडा में लेक्चरार, गुजरात के सरकारी कॉलेज में लेक्चरार होने के साथ–साथ उन्होंने एम.ए. दर्शन शास्त्र, एम.ए. हिन्दी, पी.एच.डी. तथा डी.लिट. कर डाली। फिर पंजाबी युनिवर्सिटी, पटियाला में हिन्दी विभाग के रीडर अध्यक्ष के पर आसीन हुए। इसके पश्चात्, पंजाबी युनिवर्सिटी, पटियाला से ही आचार्य एवं अध्यक्ष की पदवी से रिटायर होने के उपरान्त इन्हें हिन्दी विभाग में ही आचार्य के पद पर पुनर्नियुक्त किया गया।

डॉ. मनमोहन सहगल जी का व्यक्तित्व इनके कृतित्व में पूरी तरह से परिलक्षित होता है। यथा– "इनके व्यक्तित्व के अनेक आयाम हैं, जैसे– एक देशभक्त नागरिक, स्नेहशील मित्र एवं सद्गृहस्थ, हिन्दी के

प्रकाण्ड पण्डित, उच्च कोटि के प्राध्यापक, समन्वित संस्कृति के पोषक, संत साहित्य के शोध कर्ता, श्री गुरु नानक की वाणी के व्याख्याता और मानवतावादी–यर्थाथवादी संवेदनशील कृतिकार।"[1] इनके व्यक्तित्व के ये सारे गुण इनकी कृतियों में बिखरे पड़े हैं।

डॉ. मनमोहन सहगल हिन्दी जगत् में एक शोधक, समीक्षक तथा उपन्यासकार के रूप में विख्यात हैं। वे एक सफल अनुवादक और सम्पादक भी हैं। उनके रचना संसार की बात करें तो उनकी पच्चीस मौलिक आलोचनात्मक रचनाएँ, चौदह उपन्यास, सम्पूर्ण टीकाः गुरु ग्रंथ साहिब 4 जिलदें, छः बाल साहित्य से संबंधित पुस्तकें (भाषा विभाग द्वारा प्रकाशित), तथा पाँच पंजाबी की पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इसके अतिरिक्त 12 अनुदित रचनाएँ भी छप चुकी हैं।

डॉ. सहगल के सर्जन व्यक्तित्व में उनका उपन्यासकार का रूप सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। अपने उपन्यासों के माध्यम से उनहोंने समाज के अनेक रंगों को तथा अपने जीवन के उतार बढ़ावों को प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। उन्होंने अपने उपन्यासों में सामाजिक–सांस्कृतिक समस्याओं, वैयक्तिक और पारिवारिक स्थितियों, इच्छाओं–आकांक्षाओं, कुण्ठाओं–अभिलाषाओं, स्वपनों–वास्तविकताओं और आदर्शों, यथार्थें का चित्रण करने के साथ–साथ ऐतिहासिक–पौराणिक सन्दर्भों का के आधार पर भी उपन्यासों की रचना की है। ऐतिहासिक–पौराणिक आाधार पर लिखा गया उपन्यास 'गुरु लाधो रे' अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। गुरु तेग बहादुर जी की पाँच सौवीं जयन्ती पर उनके जीवन और कार्यों से प्रेरित होकर सहगल जी ने उनके जीवन की विविध घटनाओं, कार्य–कलापों और सिद्धान्तों का अत्यन्त रोचक वर्णन इस उपन्यास में किया है।

मुस्लिम शासन के दौरान समाज की शोचनीय दशा का यथार्थ चित्रण इस उपन्यासा में उपलब्ध है। मुस्लमान शासक औरंगजेब अपनी –मुहाफिज–ए–दीन' की चिर संचित अभिलाषा की तृप्ति के लिए समाज के सभी वर्गों को मुस्लमान बना लेना चाहता था। जिसके लिए वह अमानवीय उपयों का प्रयोग करने से भी कतई संकोच नहीं करता। यथा– "गीत तीन दिनों से वे बादशाह के घोर अत्याचार और मजहबी तअस्सब का नग्न नृत्य देख रहे थे– समस्त दिल्ली वासियों ने दीवान मतीदास को आनरे से चिरता, सतीदास का अंग–अंग कटता और दयालदास को खौलते तेल में उबलता देखा था।"[2]

ब्राह्मण जाति पर हो रहे अत्याचार को रोकने के लिए जब सारे देश के ब्राह्मणों का प्रतिनिधित्व करता हुआ एक ब्राह्मण दल गुरु जी की शरण में आया तो गुरु तेग बहादुर जी द्वारा मानवता की रक्षा के लिए तथा समाज में बढ़ रहे मुगलों के अत्याचार पर अंकुश लगाने के लिए आगे आने के संकल्प से ब्राह्मणों ने सुख की सांस ली यथा– 'गुरु विनम्रता से बोले, "चिन्ता छोड़िए, आप गुरु नानक दरबार में सहारा पाने आए हैं, वाहिगुरु आपकी रक्षा करेगा। धर्म, जाति और संस्कार–चिह्न बने रहेंगे, परमात्मा में विश्वास रखिए, सब कल्याण ही होगा।"[3]

गुरु तेग बहादुर जी हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए आत्म–बलिदान के लिए स्वयं तैयार हो जाते हैं। गुरु जी की शहीदी से पूर्व आम जनता के लिदों का दर्द तथा प्रकृति का करुण रुदन इस प्रकार वर्णित किया गया है– "काजी हुकुम सुनाकर चला गया। प्रातः काल से ही आँधी के जो संकेत मिलने लगे थे, वे घने होते चले। आकाश में धूल छा गई, बीच–बीच में धूल भरे बगूले उठने लगे। प्रतीत होता था कि तूफान आएगा– तूफान से पूर्व सागर तट की शान्ति की नाईं वातावरण गहराया और सहमा हुआ था। लोग गुरु जी को मिलने वाले दण्ड का अन्यायपूर्ण दृश्य देखने को एकत्रित होने लगे थे। गर्वीले मुस्लमान, दुःखी हिन्दु, बादशाह के कृकृत्व को

अन्याय समझने वाले स्वतन्त्र–चेता अधिकारी, दिल्ली के गुरु–सिक्ख सब कोतवाली चौक में इक्ट्ठे होने लगे। किसी के नेत्र भीगे थे, किसी का मन द्रवित था, कोई अपनी तुच्छता पर खीझता और कोई बादशाह की नौकरी पर लानत भेजता था।"[4]

'गुरु लाधो रे' उपन्यास में अनेक ऐसे प्रसंगों का वर्णन उपलब्ध है जो साम्प्रदायिक सद्भाव और धार्मिक सहिष्णुता के उदात गुणों को रेखांकित करते हैं। पीर करीम बख्श और भाई गुरदित्ता का परस्पर विश्वास, स्नेह, सेवाभाव आदि साम्प्रदायिक सद्भाव को ध्वनित करते हैं। इसके अतिरिक्त मुस्लिम महिला बीबी कौला और सिक्ख सन्तों के परस्पर आध्यात्मिक आकर्षण और आदरभाव साम्प्रदायिक सद्भाव के उत्कृष्ठ उदाहरण हैं।

'गुरु लाधो रे' उपन्यास का मूल ढाँचा ऐतिहासिक है। यह एक चरित्र प्रधान उपन्यास कहा जा सकता है। इसमें गुरु तेग बहादुर जी की बलिदान गाथा को सहगल जी ने श्रद्धाभाव के साथ प्रस्तुत किया है। इसमें इतिहास की घटनाओं, वातावरण आदि को जीवन्त रूप प्रदान किया गया है। गुरु तेग बहादुर जी सिक्ख इतिहास में 'हिन्द की चादर' कहे जाते हैं। पिता गुरु हरगोबिन्द तथा माता नानकी के घर इके अवतवित होने पर बाबा बुड्ढा जी ने कहा– "लगता है कोई महान आत्मा अवतरित हुई है। कोई बहुत बड़ा कार्य इस बालक से सम्पन्न होने वाला है। इसका रोम–रोम किसी रहस्यमयी शक्ति की गवाही दे रहा है। वाहिगुरु का रूप झलकता है इसके मुखातबिंद से।"[5]

बाबा बुड्ढा जी की यह भविष्यवाणी तब सत्य हुई तब गुरु तेग बहादुर जी ने धर्म की रक्षा करने के लिए आत्म–बलिदान दिया।

इसी प्रकार एक अन्य ऐतिहासिक घटना का वर्णन है जिसमें पैदां खाँ जो कि एक अनाथ बालक था, को गुरु जी ने न केवल अपनी शरण में लिया बल्कि उसे अपने परिवार का एक सदस्य भी बनाकर रखा। बाद में उसी ने गुरु जी पर आक्रमण किया तथा गुरु जी के हाथों ही मारा गया।

इस तरह की अनेक ऐतिहासिक घटनाओं तथा ऐतिहासिक पात्रों का वर्णन इस उपन्यास में मिलता है। ऐतिहासिक पात्रों में गुरु तेग बहादुर जी, औरंगजेब, गुरु जी की पुत्री बीबी वीरो, काली रुस्तम खाँ, बाबा बुड्ढा जी, भाई विधिचन्द, उस्मान खाँ, मक्खन शाह, लक्खी शाह, धीरमल इत्यादि प्रमुख हैं।

डॉ. सहगल ने अपनी कृति को रसपूर्ण बनाने के लिए इतिहास का वर्णन करते हुए कहीं–कहीं कल्पना का आश्रय भी लिया है। परन्तु उनकी यह विशेषता है कि कल्पना कहीं पर भी इतिहासक पर हाबी नहीं होती। गुरु तेग बहादुर जी का धर्म की रक्षा हेतु बलिदान एक ऐतिहासिक घटना है और इस घटना का वर्णन एक विशिष्ट पात्र भाई गुरदित्ता के मुख से पीर करीम बख्श तथा उसके मुरीदों को सुनवाना लेखक की कल्पना है। त्यागराय (गुरु तेग बहादुर) जी के विवाह का चित्रण करते समय भी लेखक ने कल्पना का आश्रय लिया है। जैसे– "त्यागराय की तो शान ही निराली थी। सुनहरी ज़रीदार कपड़े का अंगरखा पहना था। त्यागराय ने, सफेद लकदक चूड़ीदार पायजामा और सिर पर कलगी वाली दस्तार, जिसमें गुसहरी तारें झिलमिलाती थी। सुन्दर माथे पर सोने की लहरों वाला फूलों से गुंथा सेहरा था, कमर में तलवार सुशोभित थी, घोड़ी पर बैठा त्यागराय अपने आप में एक अविस्मरणीय दृश्य था।"[6]

इसके अतिरिक्त उपन्यास के आरम्भ में वातावरण का चित्रण भी लेखक की कल्पना का हिस्सा है– "लाल आँधी का प्रसार हो रहा था, वातावरण में धूल छाने लगी थी।"[7] अन्यत्र देखें– 'आँधी का एक ज़ोरदार सा झोंका आया। आँखों में धूल के कुछ कण पड़ जाने से मिचमिचाते हुए औरंगजेब का ध्यान भंग हुआ।"[8] औरंगजेब की ज़मीर का प्रक्ट होकर उसे उसके कुकर्मों के लिए धिक्कारना तथा गुरु जी का शीश धड़ से अलग हो जाने के पश्चात् आँधी का शांत हो जाना भी कल्पना के ही उदाहरण हैं।

प्रस्तुत उपन्यास की भाषा अत्यन्त सरल, सुबोध, मुहावरेदार, प्रवाहमयी और मर्मस्पर्शी है। अनेक ऐसे शब्दों का प्रयोग है जो पंजाबीपन को प्रदर्शित करते हैं। कहीं–कहीं तो पूरे के पूरे वाक्य ही पंजाबी में दिए गए हैं। जैसे– "आहो जी, इत्थे इक बाबा तेगा रहंदा सी।" ....."मैनू नहीं पता, सारा दिन घर रहंदा है, बाहर ता घट ही दिसदा है– बापू कहंदा सी, भजन–पाठ करदा है।"[9] कहीं–कहीं उर्दू शब्दों का प्रयोग भी मिलता है। रस की दृष्टि से उपन्यास में वीर, करुण तथा भक्ति रस का भरपूर प्रयोग किया गया है।

डॉ. सहगल जी द्वारा रचित प्रस्तुत उपन्यास आधुनिक युग में भी प्रासंगिक है। इस उपन्यास में उन्होंने त्याग, उदारता, कर्तव्यपरायणता, स्नेह, सौहार्द, संघर्षशीलता, निर्भयता, विश्वास, आस्था इत्यादि अनेक ऐसे गुणों का वर्णन किया है जिनका आज समाज में हास हो रहा है।

पौराणिक ऐतिहासिक कथानक को लेकर लिखा गया यह उपन्यास गुरु तेग बहादुर जी के बलिदान का जीवन्त इतिहास है, जो इनकी चारित्रिक विशेषताओं को प्रस्तुत करने के साथ–साथ औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता, क्रूरता तथा अत्याचार का वास्तविक चित्र पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करता है आने वाले समय में भी यह उपन्यास पाठकों के बीच प्रिय बना रहेगा तथा इन्हें सद्विचारों के लिए प्रेरित करता रहेगा।

सन्दर्भ सूची

1. *मानवतावादी उपन्यासकार मनमोहन सहगल–सम्पादनः हुकुमचन्द, राजपाल, पुष्पपाल सिंह, पृष्ठ 19*
2. *मनमोहन सहगल रचनावली–2, पृष्ठ 129*
3. *मनमोहन सहगल रचनावली–2, पृष्ठ 241–242*
4. *मनमोहन सहगल रचनावली–2, पृष्ठ 132–133*
5. *मनमोहन सहगल रचनावली–2, पृष्ठ 142*
6. *मनमोहन सहगल रचनावली–2, पृष्ठ 155*
7. *मनमोहन सहगल रचनावली–2, पृष्ठ 129*
8. *मनमोहन सहगल रचनावली–2, पृष्ठ 130*
9. *मनमोहन सहगल रचनावली–2, पृष्ठ 176*